AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

महिलाओं के शैक्षिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के संबंध के संदर्भ में

ORIGINAL ARTICLE

Authors
अनुराधा वर्मा
सहायक विकास अधिकारी (सह.)
शोधार्थी शिक्षाशास्त्र विभाग
प्रो. चंदना डे
अधिष्ठाता सामाजिक विज्ञान संकाय, विभागाध्यक्ष
शिक्षाशास्त्र विभाग
ख्वाजा मोइनुदीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय,
लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध सार

बदलते वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में महिलाओं की भूमिकाओं में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। आज महिलाएं न केवल अपने पारंपरिक सामाजिक दायित्व तक सीमित है, बल्कि शिक्षा, सेवा, उद्योग एवं प्रशासन जैसे विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहीं हैं। महिलाओं के लिए शिक्षा केवल व्यक्तित्व विकास का साधन न होकर उनके सामाजिक सशक्तिकरण का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। पारंपरिक घरेलू कार्य और नए दायित्वो के कारण उन्हें अनेक प्रकार की समायोजन संबंधी चुनौतियां का सामना करना पड़ता है। इनमें शैक्षिक समायोजन एक महत्वपूर्ण पहलू है। शैक्षिक समायोजन से तात्पर्य उसे प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से छात्राएं अपने विद्यालय, महाविद्यालय के शैक्षिक वातावरण, पाठ्यक्रम, अध्यापकों, सहपाठियों तथा सामाजिक पारिवारिक अपेक्षाओं के साथ सामंजस्य स्थापित करती हैं। यह सामंजस्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनके शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य महिलाओं के शैक्षिक समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना है। इसमें यह देखने का प्रयास किया गया है, कि शैक्षिक समायोजन किस प्रकार महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है और निष्कर्ष के रूप में यह प्राप्त हुआ कि जिन छात्राओं के शैक्षिक समायोजन का स्तर उच्च होता है,उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अपेक्षाकृत अच्छी होती है।

मुख्य शब्द

महिला शिक्षा, शैक्षिक समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि.

भूमिका

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का मूल आधार शिक्षा ही रही है। किसी भी समाज के प्रकृति तथा विकास का मूल्यांकन वहां की महिलाओं की शैक्षिक स्थिति के आधार पर किया जा सकता है। भारत जैसे विविधतायुक्त, विकासशील देश में महिलाओं की शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है फिर भी अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं पारिवारिक करणों से महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। छात्रों को शैक्षिक वातावरण में प्रवेश करने के पश्चात नए पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, प्रतिस्पर्धा, मूल्यांकन प्रणाली, घर तथा सामाजिक संबंधों के साथ स्वयं को समायोजित करना पड़ता है। यदि यह समायोजन संतोषजनक

हो तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर अनुकूल अन्यथा की दशा में प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि महिलाओं के शैक्षिक समायोजन एवं उनकी उपलब्धि के मध्य संबंध का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए।

अध्ययन की आवश्यकता

आधुनिक समाज में छात्राओं की शैक्षिक समायोजन एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू हो गया है। इनमें व्यवहार संबंधी समायोजन एवं शिक्षण संस्थानों में कुसमायोजन की समस्या तेजी से बढ़ रही है जिससे उनका प्रदर्शन नकारात्मक होकर परोक्ष रूप से समाज के विकास और देश की उत्पादकता को प्रभावित कर रहा है। छात्राओं के प्रति माता–पिता, अभिभावकों और समाज की विशिष्ट नकारात्मक अभिवृत्ति, छात्राओं के सामाजिक और बौद्धिक विकास में बाधक है। अतः छात्राओं के शैक्षिक समायोजन और उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन आवश्यक हो जाता है क्योंकि वह भविष्य की माताएं हैं और उनमें से कुछ भविष्य की नेता हो सकती हैं, जो समाज को आकार देने एवं बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी इसलिए आवश्यक हो जाता है कि परिवार, स्कूल, समाज और सरकारी पाठ्यक्रम एवं योजनाओं में इन पर विशेष ध्यान दिया जाए ताकि समाज और देश समृद्ध हो सके।

अध्ययन का उद्देश्य

1. महाविद्यालय में महिलाओं (छात्राओं) के शैक्षिक समायोजन के स्तर का अध्ययन करना।
2. महाविद्यालय स्तर पर महिलाओं (छात्राओं) की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. महाविद्यालय स्तर महिलाओं (छात्राओं) में शैक्षिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का विश्लेषण करना।
4. विभिन्न आयामों (भावनात्मक, सामाजिक, पारिवारिक) के समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव जानना।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध पत्र की समस्या महिलाओं की शैक्षिक समायोजन एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धियां के मध्य संबंध के संदर्भ में अध्ययन है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा अपनी समस्या की प्रकृति एवं शोध उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए वर्णनात्मक सर्वेक्षण (Descriptive survey) विधि का प्रयोग किया गया है जिसके अंतर्गत प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण चयनित न्यादर्श से किया गया है।

नमूना

प्रस्तुत शोध में असंभाव्य न्यादर्श की साउद्देश्य पूर्ण न्यादर्श विधि के द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है। अध्ययन हेतु महाविद्यालय (राजकीय डिग्री कॉलेज) स्तर की 250 स्नातक, परास्नातक स्तर की छात्राओं का चयन किया गया है।

शोध उपकरण

शोध समस्या से संबंधित तथ्यों को एकत्रित करने के लिए शोधार्थी अनेक तरह के साधनों का प्रयोग करता है जिससे तकनीकी भाषा में उपकरण कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति को ध्यान रखते हुए निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया हैः

1. छात्राओं के शैक्षिक समायोजन को मापने के के लिए बी. के. मित्तल की शैक्षिक समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया। इस प्रश्नावली में हां/नहीं वाले प्रश्न शामिल हैं।
2. शैक्षिक उपलब्धि के लिए वार्षिक तथा अर्धवार्षिक परीक्षा परिणाम प्रतिशत के आधार पर लिया गया है।

उपकरण की विश्वसनीयता एवं वैधता

उपकरण की विश्वसनीयता परीक्षण–पुनरपरीक्षण विधि द्वारा ज्ञात की गई है। उपकरण की रूप वैधता संबंधित विशेषज्ञों के परामर्श एवं समालोचना द्वारा निर्धारित की गई है।

सांख्यिकी तकनीक

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में प्रकल्पनाओं को दृष्टिगत रखते हुए प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय प्रतिविधियों का प्रयोग किया है–माध्य, प्रतिशत, प्रतिशतांक। इसके अलावा दो चरणों के मध्य का विश्लेषण करने हेतु काई वर्ग– परीक्षण का उपयोग किया गया है। चरों के बीच सार्थकता को 0.05 विश्वसनीयता स्तर पर परीक्षित किया गया है।

शोध समस्या का परिसीमन एवं सीमांकन

- इस शोध में लखनऊ जनपद के राजकीय डिग्री कॉलेज को शामिल किया गया है।
- अनुसंधान में लखनऊ जनपद के राजकीय डिग्री कॉलेज की छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन को छात्राओं की शैक्षिक समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन तक सीमित रखा गया है।

शैक्षिक समायोजन की अवधारणा

शैक्षिक समायोजन विद्यार्थियों के अपने शैक्षिक वातावरण के बदलाव या मांगों के अनुरूप अपने व्यवहार दृष्टिकोण एवं भावनाओं में परिवर्तन को दर्शाता है। यह समायोजन निम्नलिखित संदर्भ में देखा जा सकता हैः

1. **भावनात्मक समायोजनः** छात्रों के भावनात्मक समायोजन का संबंध उनकी भावनात्मक स्थिरता, आत्मनियंत्रण एवं मानसिक संतुलन से है। छात्रों में परीक्षा का भय, असफलता की चिंता, आत्मविश्वास की कमी, तनाव एवं अवसाद जैसी स्थितियां उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है जिसमें आत्मविश्वास, धैर्य, सकारात्मक सोच होती है, वह विद्यार्थी शैक्षिक चुनौतियां को बेहतर तरीके से सुलझा सकते हैं और सुदृढ़ भावनात्मक समायोजन शैक्षिक सफलता का आधार बनती है।
2. **सामाजिक समायोजनः** इससे तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा अपने सहपाठियों,अध्यापकों एवं शैक्षिक समुदायों के अन्य सदस्यों के साथ स्थापित संबंधों से है। सहयोगात्मक वातावरण, मित्रता, सामूहिक गतिविधियों में सहभागिता एवं संवाद कौशल छात्राओं के सामाजिक समायोजन को बेहतर बनाने के साधन होते हैं। यदि छात्राएं मानसिक रूप से अपने आपको अलग– थलग महसूस करती हैं,तो इसका नकारात्मक प्रभाव उनके अध्ययन और शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।
3. **पारिवारिक समायोजनः** किसी भी छात्र के लिए उसका पारिवारिक समायोजन उसकी शिक्षा में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पारिवारिक सहयोग,प्रोत्साहन, शिक्षा के प्रति उसका सकारात्मक दृष्टिकोण, घरेलू वातावरण का अनुकूल होना, छात्राओं के शैक्षिक समायोजन को और सुदृढ़ बनता है। इसके बदले घरेलू कार्यों में अत्यधिक उलझा होना, पारिवारिक दबाव, भेदभाव पूर्ण दृष्टिकोण छात्रों के शैक्षिक समायोजन में बड़ी बाधा उत्पन्न करता है।
4. **शैक्षिक समायोजनः** इसमें पाठ्यक्रम की सही समझ, अच्छी अध्ययन आदतें, समय प्रबंधन, मूल्यांकन प्रणाली के साथ सामंजस्य एवं सीखने की रणनीतियां सम्मिलित होती हैं। ऐसी छात्राएं जो उच्च शिक्षा में प्रवेश करती हैं, उन्हें नए विषयों, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण एवं स्वतंत्र अध्ययन शैली के साथ स्वयं को समायोजित करने की चुनौती का सामना करना पड़ता है। ऐसी छात्राएं जो प्रभावी अध्ययन तकनीक को अपनाती हैं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत उच्च पाई जाती है।
5. **सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्य समायोजनः** छात्रों को कई बार सामाजिक पारंपरिक मूल्यों और

आधुनिक शैक्षिक अपेक्षाओं के बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है। यह सांस्कृतिक समायोजन उनके शैक्षिक निर्णय, विषय चयन एवं करियर आकांक्षाओं को प्रभावित करता है। सकारात्मक समायोजन महिला सशक्तिकरण एवं शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ावा देता है।

अतः स्पष्ट है कि शैक्षिक समायोजन बहुआयामी प्रक्रिया है,जो छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित जरूर करता है।

शैक्षिक उपलब्धि

इससे आशय विद्यार्थी द्वारा शैक्षिक गतिविधियों जैसे– अर्जित ज्ञान, कौशल अभिवृत्तियों एवं दक्षताओं में प्राप्त की गई सफलता है, जिसे साधारणता परीक्षा परिणाम, अंक, ग्रेड या शैक्षिक प्रदर्शन के रूप में मापा जाता है। छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि केवल बौद्धिक क्षमता का परिणाम नहीं होती है, बल्कि बुद्धि अभिप्रेरणा, अध्ययन आदतों, पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा समायोजन जैसे अनेक कारकों द्वारा प्रभावित होती हैं। महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर विशेष रूप से आत्म अवधारणा, अभिप्रेरणा,अध्ययन आदतें,पारिवारिक तथा शैक्षिक समायोजन का गहरा प्रभाव पड़ता है। जिन छात्रों में सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, लक्ष्य निर्धारण की स्पष्ट समझ एवं आत्म नियंत्रण की क्षमता होती है, वह उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करती हैं। पूर्व में हुए शोधों से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि एक गतिशील प्रक्रिया है, जो कि समय के साथ विकसित होती है। यदि छात्रों को अनुकूल शैक्षिक वातावरण एवं भावनात्मक समर्थन प्राप्त हो तो उसकी उपलब्धि निरंतर बढ़ती जाती है। इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि को महिलाओं के शैक्षिक विकास का महत्वपूर्ण सूचक माना जा सकता है।

महिला शिक्षा की वर्तमान स्थिति

वर्तमान युग में महिला शिक्षा को सामाजिक विकास एवं राष्ट्रीय प्रगति का आधार माना जाता है। आजादी के पश्चात भारत में महिला साक्षरता में लगातार वृद्धि हुई है परंतु इसमें ग्रामीण–शहरी अंतर, आर्थिक असमानता एवं सामाजिक रूढ़िया आज भी बाधक बनी हुई है। उच्च शिक्षा में प्रवेश पाने वाली बहुत सारी छात्राएं शैक्षिक दबाव, पारिवारिक अपेक्षा एवं सामाजिक बंधनों के कारण शैक्षिक समायोजन नहीं कर पाती हैं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने के बावजूद उन्हें अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है– जैसे पारिवारिक उत्तरदायित्व, सामाजिक रूढ़िया, सुरक्षा संबंधी चिंताएं तथा करियर को लेकर अनिश्चित्ता आदि, इन सभी कारकों का प्रभाव उनके शैक्षिक समायोजन पर पड़ता है, जो अंततः उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। सरकारी योजनाएं जैसे– बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, छात्रवृत्ति योजना एवं आरक्षण नीतियां महिला शिक्षा को प्रोत्साहन प्रदान कर रही हैं इसके उपरान्त भी मात्र नामांकन बढ़ाना ही पर्याप्त नही है, अपितु छात्राओं के शैक्षिक समायोजन एवं मानसिक सशक्तिकरण पर भी ध्यान देना आवश्यक है ताकि वे शिक्षा में उत्कृष्टता का स्तर प्राप्त कर सके।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचन

अध्ययन के लिए चुने गए आंकड़ों के विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं संबंधित तकनीक की सहायता से किया गया।

उद्देश्य 1: उच्च शिक्षा स्तर के छात्रों के समायोजन के स्तर का अध्ययन करना।

तालिका 1

समायोजन का स्तर	छात्राओं की संख्या प्रतिशत में
निम्न	25.10
औसत	50.81
उच्च	23.67

*(**स्त्रोतः** प्राथमिक समंक)*

शैक्षिक समायोजन मापनी के आधार पर छात्रों को उच्च, औसत एवं निम्न समायोजन समूह में वर्गीकृत किया गया है। उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि उच्च शिक्षा स्तर के 25.10 प्रतिशत छात्राओं का समायोजन निम्न स्तर तथा 23.67 प्रतिशत छात्राओं का समायोजन उच्च स्तर का है जबकि 50.81 प्रतिशत छात्राओं का समायोजन औसत स्तर पर पाया गया।

उद्देश्य 2 महाविद्यालय स्तर पर महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि के लिए वार्षिक तथा अर्धवार्षिक परीक्षा परिणाम प्रतिशत के आधार पर लिया गया है।

तालिका 2

शैक्षिक परिणाम प्रतिशत में	निम्न	औसत	अधिक	योग
	24	22	54	100

*(**स्त्रोतः** प्राथमिक समंक)*

उद्देश्य 3 उच्च शिक्षा स्तर की छात्राओं के समायोजन व उनकी शैक्षिक उपलब्धियां के मध्य संबंध ज्ञात करना।

तालिका 3

समायोजन का स्तर	शैक्षिक परिणाम (प्रतिशत) कम	औसत	अधिक	योग	काई–परीक्षण
निम्न	24.00	22.00	54.00	100	
औसत	40.50	61.48	64.02	166	4.12
उच्च	25.50	32.68	35.82	094	

*(**स्त्रोतः** प्राथमिक समंक)*

उपरोक्त तालिका से यह ज्ञात होता है कि द्वितीय उद्देश्य 3 के तहत छात्रों के समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि में संबंध ज्ञात करने हेतु काई वर्ग–परीक्षण की गणना की गई है। गणना करने से काई–परीक्षण का मान 4.12 ज्ञात हुआ है, जबकि 0.05 स्तर पर सार्थकता स्तर का सारणी मान 9.49 है, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना छात्राओं के समायोजन और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकृत की गई।

परिणामः उच्च शिक्षा स्तर की छात्रों के समायोजन और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया अर्थात् शैक्षिक समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सांख्यिकीय संबंध नहीं पाया गया दानों चर एक दूसरे से स्वतंत्र हैं।

उद्देश्य 4 विभिन्न आयाम (भावनात्मक, सामाजिक, पारिवारिक) के समायोजन का उपलब्धि पर प्रभाव जानना।

जिन छात्रों का भावनात्मक एवं सामाजिक समायोजन बेहतर था, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च थी। सहसंबंध विश्लेषण से शैक्षिक समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। इससे तात्पर्य है कि जैसे–जैसे शैक्षिक समायोजन का स्तर बढ़ता है, वैसे–वैसे शैक्षिक उपलब्धि में भी वृद्धि होती है। जिन छात्राओं की परिवार से प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त था उनमें आत्मविश्वास एवं अध्ययन प्रेरणा अधिक पाई गई। यह निष्कर्ष अपने पूर्ववर्ती अनुसंधान की पुष्टि करता है और महिला शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक समायोजन के महत्व को रेखांकित करता है।

निष्कर्ष

1. अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि 54 प्रतिशत छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पाई गई, जबकि उनका समायोजन स्तर निम्न था, अर्थात् जिन 54 प्रतिशत छात्राओं समायोजन निम्न था, उनकी शैक्षिक उपलब्धि उच्च रही। इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्राओं का समायोजन अच्छा न होने के बावजूद उनकी

शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा। शिक्षकों एवं अभिभावकों से चर्चा के दौरान यह तथ्य सामने आया कि छात्राओं के निम्न समायोजन का प्रमुख कारण उनका पारिवारिक वातावरण एवं विद्यालयी वातावरण है। सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के कारण कई छात्राएँ विद्यालय में या अपने मित्रों के साथ समुचित तालमेल स्थापित नहीं कर पातीं, जिससे उनका समायोजन प्रभावित होता है।

2. औसत स्तर पर समायोजन करने वाले छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि 64.02 प्रतिशत पाई गई, जो कि सर्वाधिक है। अर्थात् जो छात्र घर एवं विद्यालय दोनों स्थानों पर औसत स्तर का समायोजन कर पाते हैं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर उनके समायोजन स्तर का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। इसका कारण यह है कि ऐसी छात्राएं परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालते हुए अपने शैक्षिक कार्यों को प्रभावी रूप से संपन्न कर लेती हैं।
3. उच्च स्तर पर समायोजन करने वाले छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिकतम 35.82 प्रतिशत पाई गई। अर्थात् उच्च स्तर का समायोजन करने वाले छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर इसका कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि औसत समायोजन करने वाले छात्राओं की भी शैक्षिक उपलब्धि उच्च पाई गई है।
4. अध्ययन के परिणाम यह भी दर्शाते है कि औसत स्तर का शैक्षिक समायोजन रखने वाली छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तुलनात्मक रूप से अधिक स्थिर पाई गई। ऐसी छात्राएँ परिवेश की परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालते हुए अपने शैक्षिक दायित्वों का निर्वहन प्रभावी ढंग से कर पाती है। इसके विपरीत, उच्च स्तर का समायोजन और उपलब्धि के मध्य संबंध रैखिक न होकर बहुआयामी है।
5. अध्ययन में यह भी पाया गया कि छात्राओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध तो विद्यमान है, किंतु यह संबंध सार्थक नहीं पाया गया। यदि अभिभावकों के बीच घर में कलहपूर्ण वातावरण रहता है, तो बालक वहाँ अपने आप को समायोजित नहीं कर पाता। वहीं, जिन विद्यार्थियों के परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति उच्च एवं सुदृढ़ होती है, वे अन्य स्थानों पर भी समायोजन करने में सक्षम होते हैं। ऐसे विद्यार्थी विद्यालय में शीघ्र ही मित्र बना लेते हैं तथा स्वयं को सहज एवं अनुकूलित कर लेते हैं, क्योंकि उनके अभिभावक उनकी आवश्यकताओं पर समय रहते ध्यान देते हैं। इसके विपरीत, निम्न पारिवारिक पृष्ठभूमि के छात्राएं सभी परिस्थितियों में समायोजन करने में असमर्थ पाए जाते हैं, क्योंकि वे शीघ्रता से सभी के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते तथा मित्रता करने में संकोच का अनुभव करते हैं। अतः छात्राओं का समायोजन माता–पिता की शिक्षा, पारिवारिक परिवेश तथा विद्यालयी वातावरण जैसे कारकों से प्रभावित होता है।
6. प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पारिवारिक सहयोग से छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में वृद्धि होती है। भावनात्मक एवं सामाजिक उपलब्धि को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर प्रभावित करती हैं।
7. शैक्षिक समायोजन महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है, किंतु यह एकमात्र निर्धारक नहीं है। अतः शैक्षिक उपलब्धि को समझने के लिए समायोजन के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं पारिवारिक कारकों को भी समग्र दृष्टिकोण से देखे जाने की आवश्यकता है।

शैक्षिक निहतार्थ

1. **शैक्षिक संस्थानों में परामर्श सेवाओं का विस्तारः** विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में छात्राओं के लिए नियमित मनो–शैक्षिक परामर्श (Counselling) की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे वे शैक्षिक, सामाजिक एवं भावनात्मक समस्याओं का समाधान कर सकें और बेहतर समायोजन स्थापित कर सकें।
2. **शिक्षकों की संवेदनशील भूमिकाः** शिक्षकों को छात्राओं की व्यक्तिगत भिन्नताओं, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। सहानुभूतिपूर्ण एवं सहयोगात्मक शिक्षण वातावरण छात्राओं के शैक्षिक समायोजन को सुदृढ़ बना सकता है।
3. **अभिभावक–विद्यालय समन्वय को प्रोत्साहनः** अभिभावकों और विद्यालय के बीच नियमित संवाद स्थापित किया जाना चाहिए, ताकि छात्राओं को घर और विद्यालय दोनों स्तरों पर सहयोगात्मक वातावरण प्राप्त हो

सके। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

4. **जीवन–कौशल एवं समायोजन संबंधी कार्यक्रमः** छात्राओं के लिए समय–प्रबंधन, तनाव–नियंत्रण, आत्मविश्वास एवं समस्या–समाधान जैसे जीवन–कौशल आधारित कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए, जिससे वे विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं को प्रभावी ढंग से समायोजित कर सकें।
6. **अनुकूल शैक्षिक वातावरण का निर्माणः** विद्यालयों में प्रतिस्पर्धा के साथ–साथ सहयोग की भावना को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। सकारात्मक एवं प्रेरणादायक वातावरण छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने में सहायक होता है।
7. **भविष्य के अनुसंधान हेतु परामर्शः** आगामी शोधों में शैक्षिक समायोजन के साथ अन्य कारकों जैसे आत्म–अवधारणा, अभिप्रेरणा एवं सामाजिक समर्थन को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए, जिससे शैक्षिक उपलब्धि को अधिक व्यापक दृष्टिकोण से समझा जा सके।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता, एस.पी. (2011) *अनुसंधान संदर्शिका,* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, ए. (2013) *सांख्यिकीय विधियां,* शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. भारती, भवन (1998) *मनोविज्ञान तथा शिक्षा में शोध विधियाँ,* पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना।
4. पाठक, पी. डी. (2007) *शिक्षा मनोविज्ञान में शोध विधियाँ,* पियर्सन एजुकेशन, पटना।
5. वर्मा, प्रीति. एवं श्रीवास्तव, डी. एन. (2010) *आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
6. सरस्वती, (2012) *कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन,* एपीएच प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. यादव, के. के. एवं मिश्रा, एम. (2011) *शिक्षा के सामाजिक परिपेक्ष,* लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज।
8. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) (2012) इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (खंड 50). नई दिल्ली।
9. यादव, एस. के., एवं सिम्बुल. (2006) *भारत में शिक्षक शिक्षा,* उच्च शिक्षा संघ, भारत की साप्ताहिक पत्रिका, 44, सितंबर।
10. वर्मा, मुड्डल कुमार (2003) माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी बुद्धि, समायोजन तथा उपलब्धि प्रेरणा से सम्बन्ध (प्रकाशित डॉक्टरेट शोध प्रबंध). शिक्षा शास्त्र विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी, उत्तर प्रदेश।
11. शर्मा, प्रतिभा तथा वैश्य, भगवती लाल (2014) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन, *जनरल एडवांस्ड एंड स्कॉलरली रिसर्च इन एलाइड एजुकेशन,* ISSN2230-7540, Vol VIII, ISSUE XVI, p. 85-92.
12. सुषमा तथा असवल, ममता (2022) गढ़वाल के उच्च माध्यमिक स्तर में अध्यनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, *एंथॉलजी रिसर्च,* ISSN 2456-4397, VOL VII, ISSUE IX.

——==00==——